स्वदेश, भोपाल 22 AUG 2011

तकनीक का कमाल

मध्यप्रदेश के कुछ जिलों में आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल ने प्रशासन की गति को तेज किया है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए जिला कलेक्टरों से संवाद का सिलसिला शुरु कर सरकारी तंत्र को जवाबदेह बनाने की दिशा में सार्थक पहल की है। वे प्रतिदिन चार-पांच कलेक्टरों से बात कर रहे हैं। इस संवाद में पुलिस अधीक्षकों को भी शामिल किया गया है। यह प्रक्रिया जिलों में तैनात आला-अफसरों को मुस्तैद बनाए रखेगी। जिन योजनाओं, कार्यक्रमों का जनता से सीधा वास्ता है, उनके सही तरीके से अमल पर जोर दिया जा रहा है। सरकारी तंत्र की सुस्त चाल को देखते हुए उसकी निरंतर निगरानी जरूरी है। अधिकतर सरकारी कर्मचारियों में कार्य संस्कृति का अभाव है। कलेक्टरेट, तहसील, जनपद, नगरपालिका, नगर निगम, आरटीओ सरीखे सरकारी दफ्तरों में लोगों को साधारण काम के लिए कई चक्कर लगाना पड़ते हैं। सरकारी कर्मचारी जनता का काम अहसान जताने के अंदाज में करते हैं। कई दफ्तरों में पैसा लिए बगैर फाइल आगे नहीं बढ़ती है। सरकारी तंत्र के भ्रष्टाचार और कामचोरी की प्रवृत्ति से जनता त्रस्त है। इस अराजक स्थिति को सुधारने के लिए उच्च स्तर पर पहल कारगर हो सकती है। आला अधिकारियों को मालूम होगा कि उनके कामकाज पर हर पल नजर रखी जा रही है तो वे अपने स्तर पर रिकार्ड दुरुस्त रखेंगे। मुख्यमंत्री उनसे भोपाल से जवाब-तलब कर रहे हैं। जाहिर हैं, ऐसे अधिकारी अब अपने अधीनस्थ लोगों के कान उमेठेंगे। इससे प्रशासन के रथ का पहिया अपने-आप तेज रफ्तार से दौड़ने लगेगा। खबर है, प्रदेश के चार-पांच जिलों में कलेक्टर तहसील स्तर पर कर्मचारियों से संवाद बनाने के लिए वीडियो कांफ्रेंसिंग का इस्तेमाल कर रहे हैं। सूचना तकनीक के इस औजार से सरकारी धन और अफसरों के समय की बचत हो रही है। प्रशासनिक सक्षमता भी बढ़ी है। आशा है, राज्य के अन्य जिलों में इस तकनीक का उपयोग जल्द शुरू होगा। इसके लिए राजधानी के स्तर से आवश्यक व्यवस्था किए जाने की जरूरत है। वीडियो कांफ्रेंसिंग जैसी व्यवस्था को प्रभावकारी बनाए रखने के लिए निरंतरता का तत्व पहली शर्त है। मुख्यमंत्री के लिए संभवतः अति व्यस्तता के कारण इस व्यवस्था को हमेशा चलाना संभव नहीं हो सकेगा। इस स्थिति में मंत्रियों, मुख्य सचिव और सचिवों के स्तर पर वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से प्रशासन को चौकस रखा जा सकता है।